आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 2/जून 2022
Received:02/06/2022; Accepted:10/06/2022; Published:24/06/2022

श्रीलाल शुक्ल के कथा साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

- नवीन नाथ
शोधार्थी
कुमाऊँ विश्वविद्यालय,
नैनीताल, उत्तराखण्ड
ई मेल: Naveennathnawin69096@gmail.com
मोबाइल: 9258379184, 8193821884

नवीन नाथ, श्रीलाल शुक्ल के कथा साहित्य में राष्ट्रीय चेतना , आखर हिंदी पत्रिका, खंड 2/अंक 2/जून 2022, (104-107)

प्रस्तावना:

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। संसार के किसी भी साहित्य, किसी भी व्यक्ति में राष्ट्रीय चेतना किसी न किसी रूप में अवश्य दिखाई देती है। यह व्यक्तित्व के विकास में सहायक होती है। सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक किसी भी रूप में। प्रत्येक व्यक्ति की यह निष्ठा है कि वह राष्ट्रीय भावनाओं के प्रति जागरूक रहे। यही राष्ट्रीय चेतना है। हमारा देश अनगिनत भाषाओं, बोलियों, जातियों, समुदायों तथा रीति-रिवाजों वाला देश हैं। जहाँ अनेकता में एकता की भावना ही नहीं, सभ्यता और संस्कृति भी वर्णनीय है।

किसी भी देश का साहित्य का स्वरूप वहाँ की - राष्ट्रीयता, राजनीतिक समाज, अर्थमूलक, धर्म, भौगोलिकता के कारण बदलता है। राष्ट्रीय चेतना में परिवर्तन संस्कृति, सभ्यता, रंग-रूप जातीयता, से आती हैं। राष्ट्रीय चेतना के फलस्वरुप समाज में स्नेहप्रियता की भावना आती है। जिससे जनसमुदाय एक संगल में बँध जाता है। अपनत्व की भावना ही राष्ट्रीय चेतना है, जो कल्पना शक्ति में अनंत होती है। शिक्षा समाज की धुरी है। वह समाज के लिए एक पुल की तरह काम करती हैं। यह हमारी सद्शिक्षा में निवास करती है। राष्ट्रीय चेतना स्वस्थ शरीर, मन, मस्तिष्क को नई सोच प्रदान करती है। जब हम कोई व्यापार करते हैं तो उसमें भी राष्ट्रीय चेतना का रूप दिखाई देता है। राष्ट्रीय चेतना को जागरूक करने के लिए आत्मचिंतन करना आवश्यक है। तभी राष्ट्र की उन्नति हो सकेगी। भारतीयों को अपनी संस्कृति अपनाना चाहिए, चाहे वह पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण

किसी भी दिशा की राष्ट्रीय चेतना हो, यह वांछनीय हैं। हिंदी साहित्य के इतिहास में किसी भी युग, काल विभाजन, श्रृंगारिकता, भक्तिभावना आदि की उत्पत्ति राष्ट्रीय चेतना के परिणामस्वरूप हुई। राष्ट्रीय चेतना का सर्वप्रथम प्रयोग वैदिक साहित्य में मिलता है, जिसके निर्माण में जाति, धर्म, संस्कृति की महती भूमिका है। यह वर्तमान न होकर प्राचीन है।

अर्थ एवं परिभाषा:

राष्ट्रीय शब्द राष्ट्र में 'ईय' प्रत्यय के योग से बना है। इसका तात्पर्य राष्ट्र की चेतना से है, जो समाज की उन्नति करता है। जिस समाज में संस्कृति, सभ्यता, भाषा, जाति, धर्म, रीति-रिवाज की एकता हो, उसे राष्ट्रीय चेतना कहते हैं। हमारे देश में राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप व्यापक है। राष्ट्रीय विकास के लिए आध्यात्मिक ज्ञान आवश्यक है। विभिन्न विद्वानों ने राष्ट्रीय चेतना की परिभाषाएं दी है-

डॉ.विभुराम मिश्र के अनुसार-

"राष्ट्र का सम्मिलित अर्थ पृथ्वी, उस पर रहने वाली जनता और उस जनता की संस्कृति है।"[1]

जॉनसन के अनुसार-

"राष्ट्र ऐसे लोगों का समूह है जो सामान्यतः किसी एक विशेष क्षेत्र में रहते हैं तथा स्वयं एक राज्य बनाने की इच्छा रखते हैं यदि उनका राज्य पहले से बना हुआ है तो उनकी इच्छा उसे सबसे अधिक महत्वपूर्ण सामाजिक बंधन सूत्र के रूप में सुरक्षित रखने की होती है। यह सामाजिक बंधन सूत्र उनकी पारस्परिक सम्बद्धता तथा एक सामान्य भविष्य में बराबर के भागीदार होने की उनकी भावनाओं को व्यक्त करता है।"[2]

अतः हम कर सकते है कि राष्ट्रीय चेतना वह मूलभूत इकाई है जिसका अपना एक निश्चित भू-भाग होता है। इसकी अपनी संस्कृति, सभ्यता, प्रजाति, साहित्य होता है। हमारे देश की सामाजिक भौगोलिक दिशाएं अलग-अलग हैं। भारत धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है। इसका अपना कोई धर्म नहीं है। भारत में सभी धर्म समान है। यहाँ खान-पान, रहन-सहन में भिन्नता है। फिर भी यहाँ एकता है। राष्ट्रीय भावना हमारे देश के नागरिकों के देश-प्रेम में रुचि-बसी है। राष्ट्रीय चेतना के विषय में डॉ. भीमराव आंबेडकर ने लिखा है- "राष्ट्रीयता चेतना की एक अनुभूति है, जो एक ओर व्यक्तियों को जिनमें यह इतनी प्रगाढ़ होती है कि आर्थिक संघर्ष या सामाजगत उच्चता और नीचता के कारण उत्पन्न होने वाले भेदभावों को दबाकर एक सूत्र में बांधे रखती है और दूसरी ओर उनको ऐसे लोगों से पृथक रखती है, जो इस श्रेणी में नहीं हैं।[3]

श्रीलाल शुक्ल के कथा साहित्य में राष्ट्रीय चेतना:-

श्रीलाल शुक्ला के कथा साहित्य में राष्ट्रीय चेतना अनेक रूपों में दिखाई देते हैं। जैसे - सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक। श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास 'सीमाएं टूटती हैं' में राष्ट्रीय चेतना का वंदनीय बखूबी वर्णन है। भारत अपनी सांस्कृतिक विरासत के लिए विश्व प्रसिद्ध है। अनेक राष्ट्रीय महापुरुषों ने

इस महाधरती में जन्म लिया, और इस पवित्र धरती को अपने कर्तव्य वाणी से अलंकृत किया। राष्ट्रीय चेतना के हित में महापुरुषों के जीवनशैली पर श्रीलाल शुक्ल ने 'सीमाएं टूटती हैं' उपन्यास में स्पष्ट लिखा है- "ईश्वरचंद्र विद्यासागर में एक बुढ़िया से लकड़ी का गट्ठर लेकर उसे अपने सिर पर रखकर उसके घर तक पहुँचा दिया था।"[4]

राष्ट्रीय चेतना में भाषा और सभ्यता होते है, जिससे प्रथाओं के पालन में एकता होती है। एक निश्चित भू-भाग के लोग राज्य बनाने की कल्पना शक्ति रखते हो, हम तभी सभ्य राष्ट्र कह सकते हैं। इससे अर्थव्यवस्था मजबूत होगी। रामदरबारी उपन्यास के पात्र रामस्वरूप है। यह शिवपालगंज का है। रामस्वरूप दो हजार रुपये का अनाज लेकर फरार हो जाता है। तब छंगामल इंटर कॉलेज के वैद्य जी कहते हैं - "जो भी हो यदि सरकार चाहती है कि हमारी यूनियन जीवित रहे और उसके द्वारा जनता का कल्याण होता रहे तो उसे भी जुर्माना भरना पड़ेगा। हमने अपना काम कर दिया। आगे का काम सरकार का है। उसकी अकर्मण्यता भी हम जानते हैं।"[5] श्रीलाल शुक्ला के कथा साहित्य में राष्ट्रीय चेतना सांस्कृतिक गरिमा लिये, आध्यात्मिकता से सजग उज्जवल भविष्य की व्यापक स्तर की चेतना है। देश प्रेम को राष्ट्रीय चेतना का जनाधार समझा जाता है। इनकी स्थिति ने इनके साथ कभी मुकाबला नहीं किया। मानव चेतना अन्य प्राणियों से उत्कृष्ट है जो प्रयत्नशील, चेतनाशील है। श्रीलाल शुक्ल ने 'विश्रामपुर का संत' उपन्यास में लिखा है- "इतिहास में बहुत कुछ जीने की जरूरत नहीं है। यहूदियों पर हिटलर के अत्याचारों का इतिहास पढ़ो, भारत-पाक के समय का भयानक नरसंहार और दूसरे अपराधों को याद करो या उससे कुछ ही साल पहले का बंगाल का अकाल या बाद का वियतनाम युद्ध। ये ट्रेजडी है, भूकम्प या ज्वालामुखी के उत्पात की तरह हम इन्हें भगवान के मत्थे भी मढ़ सकते, इन्हें हमारी ही पशुता ने रचा है।"[6]

राष्ट्रीय चेतना पहाड़, पेड़-पौधे, वनस्पति, जलवायु के भीतर सींचा गया बिंब ही नहीं, अपितु वह एक शक्ति भी है। श्री लाल शुक्ल के कथा साहित्य में राष्ट्रीय चेतना कूट-कूटकर भरी हुई है। स्वदेश प्रेम को आधारभूत तत्व मानते हुए श्रीलाल शुक्ल ने लिखा है- "तुम सोच नहीं सकते कि इन्हीं दो वर्षों में कितना बदल गया हूँ। कहने के लिये तो यह एक पूंजीपति का फार्म माना जाता है, पर यहाँ पर काम करने वाला भूमिहीन मजदूर नहीं रह गये हैं। उनके मन में देश-सेवा की आग जल रही है। वे जानते हैं कि यदि फार्म में अधिक अन्न हुआ तो वह देशी संपत्ति होगा और आगे चलकर वह देश की दरिद्रता को दूर करने में सहायक होगा। यह फार्म एक को-ऑपरेटिव फार्म जैसा है। रूस के कलखोज फार्मों से इसका अंतर यही है कि भारतीयता की पृष्ठभूमि पर इसके नियम बने हैं। फार्म पर काम करने वाले प्रातः साढ़े चार बजे उठते हैं, सामूहिक प्रार्थना होती है, वहीं मैं उन्हें नवीन विचारों से अवगत कराने के लिए बातचीत भी करता हूँ। मेरी आस्था है कि विदेशी मिल कपड़े का बहिष्कार हो। मजदूरों को गाढ़ा पहनने का आदेश है। मेरे कपड़े भी उसी के उपयुक्त हैं।"[7]

निष्कर्ष:

अतः हम कह सकते हैं कि राष्ट्रीय स्तर पर भाईचारे की स्थिति बनाए रखें, प्रोत्साहित करें, ताकि विकास पथ पर सामुदायिक दंगे कम हो सके। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी चेतना होती हैं, जिसमें राष्ट्रीय चेतना प्रमुख है। राष्ट्रीय चेतना के बिना मनुष्य का जीवन संभव नहीं है। हम भारतीय हैं, हमारी चेतना भी भारतीय होगी, तो यह कहना अतिशयोक्ति न होगी। हम पहले भारतीय हैं और सब कुछ बाद में। राष्ट्रीय चेतना में आज नई विचारधारा की आवश्यकता है, जिससे राष्ट्र के नई पहचान हो सके। निश्चय श्रीलाल शुक्ला राष्ट्रीय चेतना के साथ-साथ कुशाल व्यंग्यकार भी हैं।

संदर्भ ग्रँथ सूची:-

1. डॉ विभुराम मिश्र , राष्ट्रियता और हिंदी नाटक, पृ. सं.2
2. एच. एन जॉनसन, समाज शास्त्र, पृ. सं. 315
3. डॉ. भीमराव अंबेडकर, थॉट्स ऑफ पाकिस्तान, पृ. सं.25
4. श्रीलाल शुक्ल, 'सीमाएं टूटती हैं' पृ. सं.86
5. श्रीलाल शुक्ल, विस्रमपुर का संत', पृ. सं 76
6. वही, पृ. सं.205
7. श्रीलाल शुक्ल, ' सुनी घाटी का सूरज' पृ. सं.103

****